भारत - विश्व का विद्यालय

"सपना यह चीज नही है, जो हम सोने कि समय में देखते है। सपना यह है जो हमें सोने नही देते है।' - डॉ ए पि जे अब्दुल कलाम साहब जो भारत के नैजवानो को सपना देखने को सिखाया था, यह इन्ही का कथन है। हमारे जीवन में सफलता पाने के लिए हमें अपने सपनों में केन्द्रित करके विद्या का अभ्यसन करना होगा। यह ही है पढाई या विद्याभ्यास का गुण यह हमें एक अच्छा मनुष्य बनाने में मदद करेगा। और हमारे जिंदगी में अच्छे तरह जीने के लिए आज कि सिर्फ नही सभी काल में विद्याभ्यास का जरूरत है।

विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय एक बड़ी सी विद्याभ्यास स्तापन है। यह कई तरह कि होते है, जो हमारे सरकार द्वारा बनाया गया,

आम आदमियों ~~द्वारा~~ बनाया गया, और विदेशी सरकार द्वारा बनाया गया जो ~~विदेशी~~ विश्वविद्यालय कहते है। प्राथमिक पढाई के बाद हमें कई सारे मार्ग हमारे आगे खुल जाती है। इसमे से एक है विश्वविद्यालय। यहाँ हम अपने कला और कायिक और उसके ऊपर शास्त्रीय मनोभाव का विकसन कर सकते है। और इससे हमारी स्वभाव, मानसीक ताकत, संकल्प और कई सारे का विकास हो जाता है।

विदेशी विश्वविद्यालय

विदेशी विश्वविद्यालय का प्रभाव हमारे जिंदगी को कई तरह और तरीके से बेहतरिन बनाया है। विदेशी विश्वविद्यालय सिर्फ परदेश यानी कानेडा, अमरिका, न्यु योरक, आदी पर नही है। पर हमारे भारत में भी विदेशी विश्वविद्यालयों शामिल होती है। क्या? भारत में कई और देश का विश्वविद्यालय, हाँ। सही है। अंग्रेजी भरण के समय पर वह इस सभी विश्वविद्यालयों का

Item Code: 948 Participant Code: 039

आविषकार किया था। यानी भारत के कई सारे हिस्सों में अलिघर विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय और मदरसा जैसी कई सारे विश्वविद्यालयों का आविषका किया था।

विश्वविद्यालय - अवश्यकता — चरित्र

जैसे कि विदेशी विश्वविद्यालयों का शुरुआत अंग्रेजी लोग ने किया, वह उसी के उपयोग के लिए थे। इसी विद्यालयों में भारत के लोगों को पढाया सिखाया करती थी। जब अंग्रेजी लोग भारत में आया तब उसी समय उसे एक समस्या का पालन करना पड़ा। कि कई तरह वि विविधतावाली भारत में कई तरह कि भाषाए थे। और करीबन पच्चास मैल चलते ही भाषा बदल जाती थी। और भारत में अच्चे तरह से पालन करने के लिए भाषा बहुत जरूरत था। यह अंग्रेजी लोगें को पता चल गया और वे हमें अंग्रेजी सिखाने और हमसे हमारी भाषाए सीखने के और

हमारे प्राचीन भाषा में लिखाया गया किताबें का विवर्तन करना भी शुरू कर दिया। इसे भारत में कई तरह कि विदेश विश्वविद्यालय का आगमन हुआ।

विश्वविद्यालय - विदेश में और भारत में

विश्व में कई सारे विश्वविद्यालयें शामिल होती है। जैसे ओक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, कोमब्रीज यानी कई सारे .. वह सब बड़ी तरीके कि ज्ञान को हमारे अंदर भरवाने में सफल होते जा रहे है। कई सारे प्रमुख व्यक्तियाँ इसी में पढ़कर बहुत बड़ा इन्सान बन चुका है।

हमारे भारत में भी ऐसे कई तरह कि विश्वविद्यालयें शामिल होते है। और दुखीवाली बात यह है कि कई सारे विश्वविद्यालय भारत में होने पर भी हमारा नौजवान बाहरवाली देश में जाकर पढ़ाई करने का सोच रहा है। भारत के विद्याभ्यास संविधान भी विदेशी विद्याभ्यासों से छोटे नहीं है। और इसे

समझने कि बात यह है कि भारत से अधिक आपको प्यार करनेवाला देश कही पर भी नही है।

भारत का विध्याभ्यास

भारत में जो विश्व के सबसे बडा संविधानवाला हमारे अपना भारत का विध्याभ्यास "नाशणल कौणसिल ऑफ एडुकोषण रिसेर्च एँड ट्रेनिंग" नाम का एक बडा सा स्थापन के नेतृत्व में भारत के कई राज्यों का अपना विध्याभ्यास स्थापनों से अच्छी तरह आगे निकलते जा रहे हैं।

भारत के विध्यालयों कई श्रेणियाँ कि होती है। "प्रैमरी, अप्पर प्रैमरी, हैस्सेक्कन्डरी, फिर कलालय, और वैसी आगे जाते हैं। भारत के विध्याभ्यास मेखला बहुत आगे कि और बढ रहा है। इसके लिए हमें विदेशी विश्वविध्यालयों का सहारा ले सकते है। जो हमें विदेशी संस्कृति के बारे मे और विदेशी तकनिकों के बारे में ज्ञान दे सकता है।

हमारे भारत का सबसे ऊंची विश्वविद्यालय यानी "एमीमस, एनफैटि, पैपैटि, विपमर," आदि विश्वप्रसिद्ध है। और इनमें पढाई करके हमारे भारत के नागरिकों का ज्ञान और विवेक दिन भर दिन बढते जा रहे है।

हमारा इसी विकस्वर देश में विद्यालय का एक बडा सा प्रभाव होता है। इसी तरह विदेश विश्व विद्यालय का भी एक बडा सा प्रभाव हमारे भारत के नागरिकों यानी नैजवान में देखने को मिलते है। जो कि हमारा भारत का लोग अंग्रेजी लोगों कि तरह जीना चाहता है। और यह सोच विचार हमारे देश कि संस्कृति को नाश में डाल सकत है।

"अगर ज्यादा हो जाएं तो अमृत भी हानिकार बन सकता है"

हाँ हमों विदेशी विद्यालयों और असी का ज्ञान का जरूरत है। पर कभि वह ज्यादा हो जाए तो

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

Item Code: 948 Participant Code: 039

वह ~~म~~ हमारा देश और इसकी संस्कृति को और हमारी मानसिक ~~क~~विचार को भी थोड़ सकता है।

हमारा देश भारत सभी देशों को एक मातृका है। हमारा इस सुंदर सा देश विद्याभ्यास, विदेशी रिश्ता, खूबसूरती, पर्यावरण संरक्षण ~~क~~ आदि मेंथल्ताओं में बाकी दों को एक सूचना बनकर आगे निकल जा रहे हैं। और यहाँ कि नेतवान भी विश्व के कई सारे महान आदमियाँ भारतीय होते हैं, जो हमारे देश में पैदा होकर हमारी भारत माता कि जय कहकर अच्छे से पढ़कर विश्व के कई सारे कोने में जाती है। फिर भी वह भारत का अभीमान और अखंड को ऊपर रखने के लिए प्रेत्न करते हैं।

एसे हमे भी करना चाहिए, हमारा देश कि सरकार और संविधान जब हमें

विदेश जाकर पढ़ने का मौका दे रहे हैं, तो हमे उसी मौका को अच्छी तरह का विनयाम करना चाहिए।

हमारे देश का विद्याभ्यास का संविधान इतना ताकतवर है, कि कोरोण से पूरी दुनिया का हालत खराब होते समय भी भारत कि बच्चों पढ़ते ही रहे। यह है हमारा ताकत, देते ही बढ़नेवाला एक ही सामान है इस दुनिया में, वो ज्ञान है। चाहे विश्वविद्यालय विदेशी हो या स्वदेशी हो, पढ़ना, सीखना, सीखाना और आपस में एक अच्छा मनुष्य बनना जो इस दुनिया में समाधान और शान्ती फैला सकती है, यह ही सबसे ज़्यादा श्रेष्ठ होता है।